Sahitya Samhita ISSN 2454-2695
Peer Reviewed Hindi Journal Vol 6 Issue 7 June 2020

छायावाद और राष्ट्रीय चेतना

डॉ0 पूजा झा
माध्यमिक शिक्षिका, इंटरस्तरीय श्याम सुंदर विद्या निकेतन
भागलपुर(बिहार)

छायावाद आधुनिक हिन्दी साहित्येतिहास का स्वर्णयुग है। प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों में जिस तरह सूर, कबीर, तुलसी, जायसी ने काव्य के भाव–पक्ष और कला–पक्ष के सारे प्रतिमान तोड़कर कीर्तिमान कायम किया, उसी तरह प्रथम वि”वयुद्ध से द्वितीय वि”वयुद्ध के बीच जयषंकर प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी ने संपर्ण आधुनिक हिन्दी काव्येतिहास में प्रतिष्ठा और लोकप्रियता के उच्चतर मानदंडों को स्थापित किया। वस्तुतः छायावादी कविता दो वि”वयुद्धों के बीच की कविता है। छायावादी काल(1918 ई0–1936 ई0) में भारतीय जनमानस पर दे”ा को स्वतंत्र कराने की चेतना पूर्णतः छाई हुई थी। इस समय तिलक का उद्योषक ‘‘स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, और सुभाष की हुंकार ‘‘तुम मुझे खूद दो’’ मैं तुम्हें आजदी दूँगा’’ ने जनता को आजादी की लड़ाई के लिए उन्मुख कर दिया था। एक और तो गाँधी जी असहयोग सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलनों से भारतीय जनता को उद्वेलित कर रहे थे तो दूसरी और क्रांतिकारियों के बलिदानों ने सोई हुई जनता को जमा दिया था।

छायावादी काव्य में नवजागरण के संकेत अधिक महत्वपूर्ण हैं। नवजागरण की इस भावना में एक नए मनुष्य की परिकल्पना दिखाई देती है। प्रसाद यदि छायावाद के मूल में स्वानुभूति की विशिष्टता पर बल देते हैं तो इसके पीछे भी स्वाधीन मनुष्य की कल्पना है। निराला जब कहते हैं– मैंने मैं शैली अपनाई– तो इसी स्वाधीन चेतना को अभिव्यक्ति देते हैं। मूलतः भारतेन्द्र

काल में राष्ट्रीयता की जो भावना अस्पष्ट थी, अमूर्त थी, उसने द्विवेदी युग तक आते–जाते स्वदन्दतावाद के परिप्रेक्ष्य में एक नये राष्ट्रीय आद"ावाद का रुप ले लिया और उसी के प्रभाव में एक नयी मानव परिकल्पना सामने आई। इस दृ"ट से राजनीतिक परिदृश्य में तिलक की भूमिका पर विचार करें। जब वे कांग्रेस के सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए प्राचीन दा"ानिक मान्यताओं का परीक्षण कर रहे थे और गीता का आधुनिक भास्य रच रहे थे तो उसके पीछे यही नवीन राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्रीय भावना थी। कर्म सिद्धांत की प्रसाद की व्याख्या कामायनी में व्यक्त ज्ञान, इच्छा और क्रिया के पारस्परिक संबंध से तुलनीय है। राष्ट्रीय जागरण की अभियव्यक्ति प्रसाद की ''प्रथम प्रभात'' अब जागो जीवन के प्रभात'' अब जागो जीवन के प्रभात'' ''बीती विभावरी जाग री'' आदि कविताओं में है। इसकी अभिव्यक्ति हम पंत, निराला और महादेवी में भी देख सकते हैं। निराला की ''जागो फिर एक बार'' पंत की ''प्रथम रश्मि' महादेवी वर्मा की 'जाग तुझको दूर जाना'– जैसी कविताएँ इस दृष्टि से विचारणीय है। 'लहर' में संकलित प्रसाद की कविता' अब जागो जीवन के प्रभात' पर विचार करें तो प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना की झलक हमें स्वतः दिखाई देती हैः–

अब जागो जीवन के प्रभात,
वसुधा पर ओस बने बिखरे,
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे,
ऊ"ाा बटोरती अरुण गात।

प्रसाद जी ने अपने नाटकों में जो गीत योजना की है, उसमें राष्ट्रीय चेतना की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने भारत के अतीत गौरव का चित्र अंकित करते हुए दे"ा की महिमा का बखान किया हैः–

अरुण यह मधुमय देख हमारा।

जहाँ पहूँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

❖ **प्रसाद**

माखनलाल चतुर्वेदी के गीतों में राष्ट्रभक्ति अपने चरम उत्क"र्ा पर है। ''पुष्प की अभिला"ाा'' में उन्होंने एक पुष्प की यह इच्छा व्यक्त की है कि उसे शहीदों के चरणों तले आने का सौभाग्य मिलेः

'' मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देनाप तुम फेंक।
मातृभूमि पर सीस चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।''

जय"ांकर प्रसाद के काव्य संकलन 'लहर' में 'ेर सिंह का आत्मसमर्पण एवं 'पे"ोला की प्रतिध्वनि' नामक दो ऐसी कविताएँ संकलित हैं, जो स्वातन्त्रय चेतना से युक्त है। इनमें से प्रथम कविता में 1849 ई0 की उस ऐतिहासिक घटना का उल्लेख है जिसमें सिक्खों की वीर सेना ने अंग्रेजों के दाँत खट्टे किये थे। सिक्खों की उस गौरवगाथा के द्वारा प्रसाद जी ने भारतीय वीरों को अंग्रेजों के विरुद्ध संघ"र्ा के लिए प्रेरित किया है।

इसी प्रकार कवि ने ''पेषोला की प्रतिध्वनि'' नामक कविता में उदयपुर की ''पिछोला'' झील को देखकर राणा प्रताप की वीर भूमि मेवाड़ का स्मरण कियाा है जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। आज मेवाड़ में कौन ऐसा वीर है जो छाती ठोंककर दृढ़ता के साथ यह कह सके कि मैं इन विदे"ाियों को यहाँ से मार भगाऊँगा और अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने का उत्तर दायित्व अपने कंधों पर लूँगा। राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत इस कविता में कवि ने प्र"न किया है कौन दे"ा को स्वतंत्र कराने का बोझ उठाने को तैयार हैः–

''कौन लेगा भार यह?
जीवीत है कौन
सांस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर
मैं हूँ, मैं हूँ मेवाड़ में

अरावली श्रृंग सा समुन्नत सिर किसका?
बोलो, कोई बोलो अरे क्या तुम सब मृत हो?''

प्रसाद जी कामायनी में जगत की सत्यता का प्रतिपादन कर पालयनवाद एवं निरा"ाावाद का विरोध किया। नवजागरण की बेला में वे कर्मठता, कर्मण्यता का संदे"ा देते हुए नवयुवकों को संसार में प्रवृत्त होने एवं दे"ा के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा होने एवं देष के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देते हैं। राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्र जागरण की भावना को जगाए रखने में प्रसाद के विचारों की प्रमुख भूमिका है। उनके नाटकों के पात्र त्याग, सेवा, बलिदान की भावनाओं से ओत–प्रोत है तथा उनमें आत्मगौरव, स्वाभिमान एवं रा"ट्रीय चेतना विद्यमान है।

छायावादी काव्यधारा के अंतर्गत आनेवाली कृतियों पर विचार करें तो हम देखते हैं कि राष्ट्रीयता के सारे रुप कहीं खंडित रुप में, तो कहीं सं"लस्ट रुप में इनमें दिखायी पड़ते हैं। रा"ट्रीयता का जो सबसे स्थूल रुप है, वह है विदे"ाी शासन के अत्याचारों, उनसे प्रसूत जन–यातनाओं और जनता के मन में उठती हुई क्रोध तथा असंतो"ा के ललकारों का चित्रणण।

राष्ट्रीय चेतना का संबंध दे"ा के स्थूल सुख–दुःख और आक्रो"ा के चित्रण से नहीं होता बल्कि राष्ट्र की आत्मा या चेतना की पहचान से होता है। यह चेतना स्थिर न होकर गति"ाील रहती है, अर्थात् नव–नव परिस्थितियों में नये–नये कोण उभारती रहती है और पुराणे कोण छोड़ती रहती है। संस्कृति का संबंध इसी आत्मा या चेतना से होता है। यह संस्कृति जहाँ इतिहास के रुप में हमारे लिए प्रेरणा और पृष्ठभूमि बनती है, वहाँ वर्त्तमान चेतना से स्पंदित हो कर हमारा जीवन बन जाती है। प्रतिभावान और नवदृ"ट संपन्न कवियों ने संस्कृति के उदात्त अतीत रुप को वर्त्तमान जीवन–संदर्भों में पुनर्परीक्षित करके ही स्वीकार किया है। यह प्रयास प्रस्तुत अवधि के पूर्व रचित महत्वपूर्ण

काव्य–कृतियों–''य"ोधरा'', ''पंचवटी'', ''साकेत'', ''कामायनी'' ''राम की शक्तिपूजा'', आदि में भी लंक्षित होता है।

छायावाद को नवजागरण की अभिव्यक्ति कहा जाता है। इस नवजागरण के पीछे राष्ट्रीय सांस्कृति चेतना सक्रिय थी। राष्ट्रीय की चेतना की छाया संपूर्ण कालावधि में परिलक्षित होती है। प्रसाद अपनी आरांभिक कृति''चित्रधार'' में यह कहने का साहस कर सके, कि उस ब्रह्म को लेकर मैं क्या करुँगा, जो साधारण जन की पीड़ा को नहीं हरता। ''ऐसो ब्रह्म लेइ का करि हैं जो नहिं करत, सुनत नहिं जो कछु, जो जन पीर न हरि हैं।'' व्यक्तिगत वेदना कैसे व्यापक कल्याण भावना में बदलने लगती है, यह महत्वपूर्ण है। ''चिरदग्ध दुखी यह वसुधा/आलोक माँगती तब भी।'' यही अनुभव कवि को वि"व भावना तक ले जाता है।

निश्चय ही छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता की भावना को अपनी कविताओं में स्वर दिया है। अपनी कविताओं के द्वारा इन कवियों ने विदे"ाी साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय जनमानस को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। निराला की कविता ''जागो फिर एक बार'' इसी प्रकार की कविता है। निराला ने राष्ट्र प्रेम के ओजस्वी भावों से दीप्त होकर भारत माता की अद्भुत कल्पना करते हुए उसकी वंदना इन शब्दों में की हैः–

भारती जय विजय करे
कनक शस्य कमल धरे।
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि, सागर जल
धोता शुचि चरण युगल
स्तव कर बहुअर्थ भरे।।

छायावादी काव्य उस समय पल्लवित–पु"पित हो रहा था। जिस समय भारतीय जनमानस में राष्ट्र–प्रेम का समुद्र हिलोरें मार रहा था। अतः छायावादी

काव्य से यह आ”ाा करना स्वभाविक ही था कि वह अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति करे। शताब्दियों से गुलामी के बंधन में जकड़े हुए भारतवासियों में व्याप्तहीनता की भावना को दूर कर उनमें आत्मगौरव और आत्म–वि”वास कर संचार करने के लिए भारत के स्वर्णित अतीत का गौरववगान आव”यक था। इसे अपनी पूर्णता तक पहूँचाने के लिए मातृभूमि वंदना, राष्ट्र–प्रेम एवं जागरण–संदे”ा के गीतों को भी जोड़ा गया है। महाकवि निराला ‘खंडहर के प्रति’ नामक कविता में भारत के महामानवों का स्मरण दिलाते हुए कहते हैं–

‘‘आर्त भारत्! जनक हूँ मैं
जैमिनी, पतंजलि व्यास ऋ”ायों का,
मेरी ही गोद पर शै”ाव विनोद कर
तेरा ही बढ़ाया मान
राम–कृ”ण भीमार्जुन भीष्म नर देवों ने।

राम नरे”ा त्रिपाठी अपने ‘‘पथिक’’ में उद्बोधन करते हैः–

‘‘अपना शासन आप करो तुम यही शांति है सुख है
पराधीनता से बढ़ जग में नहीं दूसरा दुख है।’’

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना और मातृभूमि वंदना की सीधी और सहज अभिव्यक्ति हुई है। राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक है। जिसमें पराधीनता, अज्ञानता, गरीबी, अस्पृ”यता, ऊँच–नीच की भावना, अंधवि”वास और उनसे उत्पन्न क्ले”ाों का भी चित्रांकन किया गया है। अपना नाम प्रचारित किये बगैर महादेवी ने जहाँ अपने प्रारंभिक काव्य–काल में राष्ट्रीय चेतना से संबंधित कविताएँ लिखी, वहीं प्रसाद, निराला और पन्त भी पीछे नहीं रहे। यद्यपि इन कवियों का प्रमुख काव्य स्वर राष्ट्रीय चेतना का न होकर काव्य की भाषा एवं अंतः करण के भावों के संस्कार का था, तथापि छायावाद काल में हम हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रवादी गीतों को देखते हैं। हिमाद्री–तुंग–श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती–(प्रसाद), भारती जय विजय करे(निराला), जय जन भारत जन मन अभिमत(पन्त), मस्तक देकर हम आज खरीदेंगें ज्वला(महादेवी) जैसे गीत राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति करते हैं।

कवियों का एक ऐसा स्वतंत्र वर्ग भी था जिसका प्रमुख स्वर राष्ट्रीय जागरण ही रहा। इसके प्रमुख कवि है– सुभद्राकुमारी चौहान(खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी) माखलाल चतुर्वेदी(हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिणी), रामधारी सिंह दिनकर(रेणुका), सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' इत्यादि है। इन कवियों ने दे"ावासियों की राष्ट्रीय चेतना को जगाने का प्रयास किया तथा उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ने के लिए प्रेरित किया। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने दे"ा के नवयुवकों को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आत्म बलिदान के लिए प्रेरित करते हुए कहाः

है बलिदेवी सखे प्रज्वलित मांग रही ईंधन क्षण–क्षण।
आओ युवक लगा दो तो तुम अपने यौवन का ईंधन।

इनकी एक अन्य रचना में क्रांति एवं ध्वन्य का स्वर विद्यमान है–

''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल–पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।''

''जागो फिर एक बार'' कविता में निराला ने भारतीयों को उनके अतीत गौरव का स्मरण कराते हुए उन्हें स्वातन्त्रय चेतना से भरने का प्रयास किया हैः

''तुम हो महान
तुम सदा हो महान
है न"वर यह दीन भाव
कायरता, कामपरता
ब्रह्म हो तुम
पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह यह विष्व भार
जागो फिर एक बार।''

निश्क”र्ा:– छायावाद में रा”ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत रचनाएँ प्रस्तुत हुई और ‘प्रसाद’, ‘पंत’, ‘निराला’; तथा अन्य छायावदी कवियों में आध्यात्मिक क्रांति और रा”ट्रीयता के स्वर सुनाई दिए। जिससे भारतवासियों में नव स्फूर्ति और नव चेतना का संचार हुआ। अतीत के द”र्ान ने और भारतीय महापुरुषों की जीवन झाँकियों ने जन–जन के हृदय में राष्ट्रीय चेतना का जो संचार किया था, उसका प्र”ास्त रुप छायावादी काव्य में परिपक्व रुप में दिखाई पड़ता है। छायावादी काव्यधारा की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना ने मानव–चेतना को एक विकसित और परिपक्व रुप प्रदान किया, विषे”ा कर ‘निराला’, ‘प्रसाद’, ‘पन्त’ आदि प्रमुख कवियों में मानव–चेतना का यह पक्ष अधिक उभर कर आया है। यद्यपि छायावाद की अविरल धारा बीस–पच्चीस वर्ष ही रही, वाद में वह धारा क्षीण हो गयी परन्तु उसने इस अवधि में राष्ट्रीय भावना और संस्कृति को ऊँचाई प्रदान की। जिसके परिणामस्वरुप राष्ट्रीय चेतना और मानवतावाद की छायावादी कविता की आधार”ीला के रुप में प्रकट हुई। राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण प्रसाद का जागरण गीत द्रष्टव्य है–

‘‘हिमाद्री तुग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती।’’

छायावादी काव्य का यही अभि”ट छायावादी विचारधारा तथा राष्ट्रीय चेतना का सांस्कृतिक उत्क”र् है, जहाँ समस्त मानवता विजयिनी बन जाती हैः–

‘‘औरों को हँसते देखो, मनु, हँसों और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।’’

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ0 नरेन्द्र मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, दिल्ली।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचन्द्र 'ुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा, का"ी।
3. हिन्दी में छायावाद– मुकुटधर पांडेय, तिरुपति प्रका"ान, हापुड़।
4. छायावाद युगीन साहित्य वाद विवाद– गोपाल प्रधान, स्वराज प्रका"ान, दिल्ली।
5. सहायक पुस्तक– यू0जी0सी0 नेट प्रतियोगिमा साहित्य सीरिज।
6. आधुनिक हिन्दी काव्य– इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विष्वविद्यालय मानविकी विद्यापीठ।
7. हिंदी साहित्य– बीसवीं शताब्दी– नंद दुलारे वाजपेयी, लोकभारती, इलाहाबाद।
8. हिंदी साहित्य– उद्भव और विकास– हजारी प्रसाद द्विवेदी।